प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. रामचंद्र जिव्बा केसरकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय की `एम.फिल्. ( हिन्दी ) `उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध `कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन` मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूर्ण किया है। संपूर्ण लघु-शोध-प्रबन्ध को आरंभ से अंत तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाण-पत्र दे रहा हूँ। श्री. रामचंद्र जिव्बा केसरकर के प्रस्तुत शोध-कार्य से मैं संतुष्ट हूँ।

(प्रा. शरद कणबरकर)
शोध-निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर।

दिनांक :२८। २।१९९०।

प्रख्यापन

मैंने ' कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन का महत्व ' लघु-शोध-प्रबन्ध प्रा. शरद कणाबरकर जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया हैं। मेरा यह मौलिक शोध-कार्य हैं। यह लघु-शोध-प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया हैं।

शोध कर्ता छात्र
(श्री केसरकर आर. जे.)

दिनांक : २८/१२/१९९० ।
कोल्हापुर ।

••

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्रमांक
	प्राक्कथन	१-४
अध्याय पहला	- कबीर का जीवन परिचय ।	१-१६
अध्याय दूसरा	- कबीर कालीन सामाजिक परिस्थिति ।	१७-३२
अध्याय तीसरा	- कबीर बाणी में प्राप्त समाज-दर्शन ।	३३-१३६
	अ) कबीर का धर्माचरण संबंधी चित्रण । विचार और आचार-कर्मकाण्ड- बाह्याचार ।	
	आ) नारी - भावना ।	
	इ) गृहस्थ और संन्यास धर्म ।	
	ई) अनिष्ट प्रथा और परंपराओं की आलोचना ।	
अध्याय चौथा	- कबीर के काव्य में अभिव्यक्त `समाज - दर्शन` का महत्व ।	१३७-१५७
	उपसंहार	१५८-१६४
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	१६५-१६८

प्राक्कथन

प्राक्कथन

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए मेरा मन हिन्दी सन्त साहित्य ने आकर्षित किया । हिन्दी साहित्य के नभांगण को अपने काव्य से आलोकित करनेवाले एक सितारे की ओर मैं अपने आप आकर्षित हुआ, जिसके काव्य में सूर्य-प्रकाश जैसी स्पष्टता, चन्द्र प्रकाश जैसी मोहकता और शुक्र के तारे जैसी आह्लाददायकता मैंने अनुभव की । वह सन्त भक्त कवि था कबीर । उस पर विशेष अध्ययन करते हुए अपनी विशेष दीप्ति से समाज को मार्गदर्शन करनेवाले कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज दर्शन' इस विषय को लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत करने का विचार मन में घर कर बैठा । यही विचार मैंने हमारे प्रिय, समाजप्रिय और विद्यार्थियों को खास करके हिन्दी साहित्याध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले मार्गदर्शक प्रा. शरद कणाबरकर जी से चर्चा की । उन्होंने अनुमति तो दे ही दी, इतना ही नहीं, बल्कि मेरे विचारों को एक सुनिश्चित दिशा में मार्गदर्शन भी किया ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्न प्रश्न उठे ---

(१) सन्त कबीर के जीवन का गहराई के साथ परिचय प्राप्त किया जाय ।

(२) कबीर-कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिस्थितियों का पता लगा लिया जाय जो समसामयिक साहित्य को प्रभावित करती हैं ।

(३) कबीर-वाणी में अभिव्यक्त समाज दर्शन के अंतर्गत धर्माचरण संबंधी चित्रण किस प्रकार किया गया है ? तत्कालीन समाज में आचार-विचार का चित्रण कैसा किया गया है ? तथा कबीरदास ने कर्मकाण्ड और बाह्याचार के संबंध में अपने विचार किन शब्दों में प्रकट किये हैं ?

कबीरदास ने नारी के संबंध में भले-बुरे विचार किस प्रकार व्यक्त किये हैं ?

गृहस्थ और संन्यास धर्म के बारे में कबीरदास के विचार कैसे थे ?

सामाजिक अनिष्ट प्रथाओं और गलत परंपराओं की आलोचना कबीरदास ने किन शब्द-बाणों से की है ?

(४) और कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन का महत्व तत्कालीन परिस्थिति में क्या था ? और आज भी कबीर के समाज-दर्शन का महत्व क्या है ?

मेरे प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैंने अपने लघु-शोध-प्रबन्ध की निम्न प्रकार रूपरेखा बनायी और काम में जुट गया ।

अध्याय पहला --

कबीर का जीवन परिचय ।

अध्याय दूसरा --

कबीर-कालीन सामाजिक परिस्थिति ।

अध्याय तीसरा --

कबीरबाणी में प्राप्त समाज-दर्शन --

(अ) कबीर का धर्माचरण संबंधी चित्रण । विचार और आचार-
कर्मकाण्ड-बाह्याचार ।

(आ) नारी - भावना ।

(इ) गृहस्थ और संन्यास धर्म ।

(ई) अनिष्ट प्रथा और परंपराओं की आलोचना ।

अध्याय चौथा --

कबीर के काव्य में अभिव्यक्त ' समाज-दर्शन ' का महत्व ।

उपसंहार --

और मुझे यह स्पष्ट करने में बडा आनन्द होता है कि इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ निकालने में मेरे प्रिय गुरु प्रा.शरद कणबरकर जी से संतोषपूर्ण मार्गदर्शन मिला ।

सम्बन्धित विषय की व्याप्ति कितनी विस्तृत है यह स्पष्ट करने की जरूरत है ही नहीं । केवल विषयज्ञान सुस्पष्ट होने के लिए ही इस प्रकार से मैंने रचना की है ।

विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में रखे हुए हैं । और अन्त में संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी जोड दी है ।

अहिन्दी भाषी छात्र होते हुए भी मुझे अपने इस कार्य में श्रध्देय गुरुदेव प्रा.शरद कणबरकर जी का अध्ययन संपन्न पथप्रदर्शन बहुत बडा सहायक साबित हुआ है । अपनी व्यस्तताओं के बावजूद श्रध्देय प्रा.शरद कणबरकर जी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझे जो मार्गदर्शन किया है उस ऋण से उऋण हो पाना केवल असंभव है । प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के गुण आप के और त्रुटियाँ मेरी हैं ।

घरेलू ग्रामीण वातावरण एवं अनेक आपत्तियों के कारण एम.फिल.की उपाधि पाना मेरे लिए नामुमकिन था, लेकिन वात्सल्यभरी प्रेरणा देनेवाले और साहित्याध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले श्रध्देय प्राचार्य गुरुदेव डा.व्ही.व्ही. कटाम्बले और मेरे मित्र अध्यापक श्री.जी.एम.कटक जी ने मुझे उत्साहित किया ।

सब लोगों का स्नेहभरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत शोध-कार्य में सफल न हो पाता । जिन सुहृदों ने इस संशोधन कार्य में मेरी सहायता की हैं , उन सब के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मुझे अपने संशोधन कार्य में निरंतर प्रेरणा देनेवाले और अपनी ओर से सक्रीय सहयोग देनेवाले मेरे पथप्रदर्शक श्री विजयसिंह पाटील, श्री.ए.बी.गगदाणी आदि को मैं धन्यवाद देता हूँ । साथ ही कोल्हापुर हायस्कूल,कोल्हापुर के मुख्याध्यापक श्री.एस.डी. पुजारी, न्यू कॉलेज,शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थपाल, प्राचार्य एवं सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ । टंकलेखनिक श्री बाकृष्ण रा. सावन्त ,कोल्हापुर ने उत्तम टंकलेखन कर और राजहंस प्रेस, कोल्हापुर ने समय पर उत्तम बाइंडिंग कर दिया इसलिए मैं उनका भी आभारी हूँ ।

श्रध्देय डा.व्ही.के.मोरे जी ,डा.द्रवीडजी,प्रा.रजनी भागवत तथा प्रा.तिवले जी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सहायता और सफलता देता रहा हैं । भविष्य में भी इन सब गुरुजनों से आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

श्री कैसरकर आर.जे.

कोल्हापुर ।
२८ फरवरी ,१९९० ।

..